International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 12 Issue 12 || December 2023 || PP. 91-95

भारतीय संस्कृति और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण

सोहनलाल
सह अचार्य राजनीति विज्ञान विभाग
चौधरी बल्लू राम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय श्रीगंगानगर

शोध सार
भारतीय चिंतन परंपरा में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा कूट–कूट कर भरी पड़ी है। हमारे ऋषि वैज्ञानिक उनकी प्रकृति के संरक्षण में रहते थे, इसीलिए प्रकृति के संरक्षण हेतु उन्होंने विभिन्न प्रकार के विधि–विधानों का प्रावधान किया है। भारतीय परंपराओं का प्राकृतिक संरक्षण से नाता बहुत पुराना है। प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में प्रकृति के साथ संतुलन करके चलने का एक महत्वपूर्ण संस्कार है यदि यह परंपरा ना होती तो भारत की स्थिति भी गहरे संकट में फंसे पश्चिमी देशों की तरह ही परिलक्षित होती।
पुराने समय में व्यक्ति प्रकृति के संरक्षण में रहता था, तब प्राकृतिक संसाधनों संबंधी अथवा पारिस्थितिकी असंतुलन जैसा कोई संकट नहीं था, जैसे–जैसे मानव लालच में फंसता गया, वह प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करता गया, जिससे पारिस्थितिकी असंतुलन में वृद्धि हुई। मानव उपभोगवादी प्रवृत्ति, विलासितापूर्ण जीवन में पर्यावरण के प्रत्येक अवयव को प्रदूषित करने में आगे बढ़ता चला गया। जिसका त्रास हमने कोरोना महामारी के दौरान अनुभव किया कि मानव का अस्तित्व ही संकट में पड़ा हुआ नजर आया।
प्रकृति ने मानव जगत के कृत्यों का बदला लेना शुरू कर दिया है। 'हम ही शिकारी, हम ही शिकार' वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। पारिस्थितिकी असंतुलन भारत का ही नहीं अपितु वैश्विक संकट बन गया है और यह चिंता का विषय भी है कि बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण एवं पारिस्थितिकीय असंतुलन का समाधान कैसे किया जाए? भारतीय चिंतन परंपरा में प्राकृतिक संसाधनों के प्रति ईश्वरीय लगाव इस तरह रचा बसा है कि प्रकृति के बिना हम अपने अस्तित्व की बात सोच भी नहीं सकते। भारतीय संस्कृति में प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण का एक आध्यात्मिक मानी जाती रही है। इसी कारण भारत में प्राकृतिक संसाधनों के समस्त अवयवों में किसी न किसी दैवीय शक्ति का अंश जानकर प्राकृतिक संरक्षण की महत्ता प्रतिपादित की गई है।

शब्द कुंजी'
भारतीय संस्कृति, प्राकृतिक संसाधन, ऋषि वैज्ञानिक, पारिस्थितिकीय असंतुलन,

---

Date of Submission: 14-12-2023 Date of Acceptance: 30-12-2023

शोध का उद्देश्य

- भारतीय संस्कृति में निहित प्राकृतिक संसाधन के संरक्षण की अवधारणा के प्रति आम जनमानस को अवगत करवाना ताकि वे अध्यात्मिक स्वरूप में प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में अहम भूमिका का निर्वहन कर सकें।
- अनावश्यक दिखावे के विचार को त्याग कर सादा जीवन उच्च विचार के आदर्श को अपनाएं।
- अतिशय दोहन व अतिशय उपभोग की रोकथाम के लिए प्रेरित करना।
- विकास के नए प्रतिमान सम विकास पारिस्थितिकीय विकास संपोषित विकास एवं सतत विकास की अवधारणाओं पर अनुसंधान हेतु प्रेरित करना।
- संसाधनों के अविवेकपूर्ण दोहन से उत्पन्न समस्याओं के विषय में जागरूकता बढ़ाना।

शोध आलेख

''कोई भी राष्ट्र गुणात्मक शक्ति स्त्रोत के बिना आधुनिक बनने की चाह नहीं रख सकता''

''डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम''

पर्यावरण के प्रति संवेदनशील हमारे पूर्वजों अर्थात् ऋषि वैज्ञानिकों ने अपनी तपस्थली, आवास और आश्रमों में पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने वाले दीर्घजीवी एवं स्वास्थ्य के लिए उपयोगी वृक्षों को लगाया और उनके महत्व को देखते हुए उनके संरक्षण और संवर्धन के लिए उन्हें पूजनीय भी बनाया। वे वृक्ष, नदी, सरोवर, कुंआ सबकी उपयोगिता समझते थे। यही नहीं मिट्टी, अन्न, पशु–पक्षी सबकी भरपूर उपस्थिति ही मनुष्य के जीवन का आधार है। इसी विमर्श को हमारे पूर्वजों ने अपनी उपासना में स्थान दिया। हम उस महान संस्कृति के वाहक है जिसका लोकमानस जीवन का प्रतिपल प्रकृति और पर्यावरण को समर्पित कर जीता था। सत्य तो यह है कि जब हम लोक कहते है तो इस लोक में मनुष्यों का समूह ही नहीं, सृष्टि के चर–अचर सभी सम्मिलित होते हैं। पशु, पक्षी, वृक्ष, नदी, पर्वत सब लोक है और सब

के साथ सांझेदारी की भावना लोकदृष्टि है। सबको साथ लेकर चलना ही लोक संग्रह है ओर इन सबके बीच जीना यही है लोकयात्रा।

वर्तमान में प्राकृतिक संसाधनों का दोहन का आलम यह है कि जल, जंगल, जमीन के सम्मान के लिए घोर संकट पैदा हो गया है। आने वाली संतति के लिए यह प्राकृतिक संसाधन हम बचा पाएंगे या नहीं, यह सोचनीय एवं चिंतनीय है। इन सब के चलते आने वाले समय में मानवीय सभ्यता का अंत दिख रहा है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि हमारी पृथ्वी का जीवन चक्कर समाप्त होता हुआ दृष्टिगोचर हो रहा है। जिसके कारण सूखा, बाढ़, भूस्खलन, मृदा अपरदन, मरुस्थलीकरण भूकंप, जलवायु परिवर्तन, सुनामी, ग्लोबल वार्मिंग जैसे आपदाएं मानवीय जीवन संकटग्रस्त है। समस्त मानव प्रजाति के समक्ष यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ है कि आखिर प्राकृतिक संसाधनों को कैसे बचाया जाए। हम औद्योगिक एवं तकनीकी विकास को भी नहीं रोक सकते, क्योंकि इसके बिना भी मानव जीवन संभव नहीं है, इसलिए हमें प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए भारतीय संस्कृति की अवधारणा के सहारे आगे बढ़ना होगा। ऐसी स्थिति में हमें समविकास,पारिस्थितिकीय विकास, संपोषित विकास, समन्वित विकास एवं सतत विकास की अवधारणाओं को दृष्टिगत रखना होगा।

प्राकृतिक संसाधन

प्राकृतिक संसाधनों का तात्पर्य उनसे है जो मानव को प्रकृति द्वारा बिना कोई मूल्य चुकाए प्रदान किए जाते हैं। प्राकृतिक संसाधन में भूमि, मिट्टी, जल, वन, खनिज, समुद्री साधन, जलवायु एवं वर्षा इत्यादि शामिल किया जाता है, प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं। प्राकृतिक संसाधन भौतिक पर्यावरण का वह भाग है, जिन पर मनुष्य अपनी अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु निर्भर रहता है।

प्राकृतिक संसाधन दो प्रकार के होते हैं———

1. नवीनीकरण होने योग्य प्राकृतिक संसाधन।
2. नवीनीकरण न होने योग्य प्राकृतिक संसाधन।

भारतीय संस्कृति : प्राकृतिक संरक्षण के विभिन्न आयाम

भारत प्रकृति के संरक्षण की परंपरा का जन्मदाता है। जहां प्रत्येक जीव के कल्याण का भाव है। जहां जितने भी त्यौहार मनाए जाते हैं, सब के सब प्रकृति के अनुरूप हैं, चाहे वह मकर सक्रांति हो, बसंत पंचमी, महाशिवरात्रि, होली, नवरात्र, गुड़ी पड़वा, वट पूर्णिमा, दिवाली, कार्तिक पूर्णिमा, छठ पूजा, शरद पूर्णिमा, देव प्रबोधिनी एकादशी, हरियाली तीज एवं गंगा दशहरा आदि सब त्योहारों में प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण परम कर्तव्य माना गया है। प्रकृति के पंच तत्वों की रक्षा के लिए एवं संरक्षण के लिए भगवान की पूजा का प्रावधान है भ = भूमि, ग =गगन, व = वायु, अ = अग्नि, न = नीर की अवधारणा में प्रकृति के पांच तत्व भूमि, जल, आकाश, वायु, अग्नि एवं समीर सम्मिलित है। प्राकृतिक संसाधनों के प्रति भारतीय संस्कृति की इतनी उत्कृष्ट संकल्पना हमें वैश्विक दर्शन में कहीं दिखाई नहीं पड़ती। भारतीय चिंतन परंपरा के अनुरूप प्रकृति के विभिन्न अवयवों में ईश्वरीय अंश को मानते हुए उपलब्ध विधानों के प्रावधानों अनुसार इहलौकिक जनमानस के हितार्थ प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण वर्तमान समय की ज्वलंत मांग है।

- ❖ **आश्रयदात्री धरती**

वैदिक मंत्रों के माध्यम से भौतिक सुखों में विलीन हो रहे मानव को यह शिक्षा दी गई है कि वह जीव जंतुओं को महत्वहीन न समझे। प्राकृतिक घटकों में देव सदृश्य शक्ति का दर्शन करें। समस्त जीव–जंतुओं को आश्रय देने वाली इस धरती को माता और अपने आपको उसका पुत्र मानने के लिए कहा गया है यथा——

माता भूमिः पुत्रों अहं पृथव्याः।

भावार्थ यह भूमि हमारी माता है और हम इस पृथ्वी के संतान है यह धरती माता अपने पुत्र हेतु निरंतर सुख समृद्धि की स्रोत बनी रहती है। इसीलिए इस धरती माता के असीम महत्व को जानकर इसे बार–बार प्रणाम किया गया है। यथा–

नमो मात्रे पृथिव्यैः, नमो मात्रे पृथिव्यैः।

- ❖ **प्राणवायु दाता वृक्ष**

भारतीय परंपराओं में प्रकृति पूजन को प्रकृति संरक्षण के तौर पर देखा जाता है। भारत में पेड़–पौधों, नदी, नालों, पर्वत, पहाड़ों, ग्रह, नक्षत्र, अग्नि, वायु सहित प्रकृति के भिन्न–भिन्न रूपों के साथ मानव के रिश्ते जुड़े हुए हैं। ग्रह, नक्षत्र, पर्वत, देव रूप माने गए हैं। पुराने समय से ही भारत के वैज्ञानिक ऋषि–मुनियों के प्रकृति संरक्षण के महत्व ज्ञात था। वे जानते थे कि मानव व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए बड़ी बड़ी भूल कर सकता है, जिससे उसका नुकसान संभव है, इंसान प्रकृति का खिलवाड़ ना करें, इसलिए उन्होंने प्रकृति के साथ मानव के रिश्ते विकसित करने में कोई कोर कसर बाकी न रख छोड़ी। प्राकृतिक संरक्षण एक महत्वपूर्ण संस्कार है, यह जो रिश्ते मानव के प्रकृति के साथ जोड़े गए हैं, यह जो परंपराएं हैं, अगर भारत में इनका आचरण नहीं किया गया होता तो हमारी स्थिति भी पश्चिम देशों की तरह होती। भारतीय परंपराओं ने प्रकृति का संरक्षण भिन्न–भिन्न स्वरूपों में किया है। दुनिया का सबसे प्राचीनतम ग्रंथ आयुर्वेद का प्रथम मंत्र ही अग्नि की स्तुति में रचा गया है। भारतीय दर्शन 'जियो और जीने दो' के सिद्धांत पर आधारित है। वैदिक वांग्मय में प्रकृति के प्रत्येक अंग के संरक्षण और संवर्धन के लिए निर्देशित किया गया है। हमारे वैज्ञानिक ऋषि जानते थे कि धरती का आधार जल और जंगल है इसलिए उन्होंने धरती की रक्षार्थ वृक्ष और जल के संरक्षण को महत्वपूर्ण मानते हुए कहा–

"वृक्षाद् बर्षति पर्जन्यः पर्जन्यादन्न संभवः"

अर्थात वृक्ष जल है, जल अन्न है तो अन्न जीवन है। इस तरह जंगल को हमारे ऋषि आनंद का स्रोत मानते थे। यथा–

"आरण्यम् ते पृथिवी स्योनमस्तु"

हमारी संस्कृति में वृक्षों को देवता मानकर उनकी पूजा करने का निर्देश है। सम्राट विक्रमादित्य और अशोक के शासनकाल में वन रक्षा सर्वोपरि कर्तव्य था। चाणक्य ने भी आदर्श शासन अवस्था में अनिवार्य रूप से अरण्यपालों की नियुक्ति करने की बात कही है। भारतीय संस्कृति इस बात का पक्ष लेती है कि पेड़ों में भी चेतना होती है, इसलिए उन्हें मानव तुल्य माना गया है। ऋग्वेद से लेकर वृहदारण्यकोपनिषद, पद्मपुराण और मनुस्मृति सहित अन्य धर्म ग्रंथों में इसके संदर्भ मिलते हैं। छान्दोग्यउपनिषद् में उद्दालक ऋषि अपने पुत्र श्वेतकेतु से आत्मा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वृक्ष जीवात्मा से ओतप्रोत होते हैं और मनुष्य की भांति सुख–दुख की अनुभूति करते हैं। हमारी भारतीय संस्कृति अरण्य संस्कृति रही है,क्योंकि हमारे ऋषि वैज्ञानिक प्रकृति के बीच में विचरण करते करते चिंतन मनन करते। अंततः प्रकृति में ही विलीन हो जाते थे। प्रकृति संरक्षण का सबसे बड़ा कारक यही था कि वह प्रकृति को जीवनदायिनी, सुषमा एवं सुख समृद्धि का स्रोत मानते थे।

भमिनी विलास में वर्णित है कि जो वृक्ष फूल पत्ते एवं फलों के बोझ को उठाए हुए धूप की गर्मी व शीत की पीड़ा को बर्दाश्त करता है एवं परहित के लिए अपना शरीर अर्पण कर देता है उस वंदनीय श्रेष्ठ वृक्ष को नमन है। नरसिंह पुराण में भी वृक्ष को ब्रह्म स्वरूप मानकर उसे सम्मान दिया गया है। यथा –

एतद् ब्रह्म परम् चौव ब्रह्म वृक्षस्य तस्य तव।

जातक कथाओं में भी वृक्षों को मानव जगत की समस्त आवश्यकताओं को पूरी करने वाला कल्पवृक्ष माना गया है। यथा–

सर्वकामदा वृक्षाः।

वेदों में वृक्षों की महिमा का वर्णन किया गया है वृक्षों में देवताओं के निवास माना गया। यथा–

ब्रम्हरूपास मधयतो विष्णुरूपिणें
अग्रतः षिवरूपाय वृक्षराज थे नमः

भावार्थ पेड़ों के मूल में ब्रह्मा बीच में भगवान विष्णु और शीर्ष भाग पर शिव का निवास होता है।

स्कंद पुराण में वृक्षों में विष्णु का वास माना गया है। यथा –

एको हरिःसकल वृक्षगतो विभाति।

अथर्ववेद में पीपल में वृक्ष को देवताओं का निवास माना गया है। यथा–

अश्वत्थः देवसदन।

गौतम बुद्ध को भी पीपल के वृक्ष के नीचे ही ज्ञान प्राप्त हुआ था उसी समय से पीपल के वृक्ष को बोधि वृक्ष कहा जाता है। वराह पुराण में उल्लेखित है कि जो व्यक्ति पीपल, नीम या बरगद का एक, अनार या नारंगी के दो, आम के पांच और लताओं के दस वृक्ष लगाता है, वह कभी नरक में नहीं जाता है। तुलसी को देवतुल्य मानते हुए भारतीय चिंतन परंपरा में कहा गया है कि जिस गृह में तुलसी की पूजा होती है, वहां यमदूतों का आवागमन नहीं रहता है। यथा––

तुलसी यस्य भवने तत्यहं परिपूज्ये।
तदगृहम् नोवर्संति कदाचित यमकिंकरा।।

तुलसी के पौधे की पूजा की जाती है, क्योंकि यह सबसे अधिक प्राणवायु ऑक्सीजन देता है। इसमें अनेक औषधीय गुण होते हैं। पीपल के देवता को पीपल के पेड़ को देवता मानकर उसके नियमित पूजा भी अधिक मात्रा में आक्सीजन देने के कारण की जाती है। रात्रि में पेड़ पौधों के पास जाने की मनाही है, क्योंकि रात में पेड़ पौधे कार्बन डाइऑक्साइड गैस का त्याग करते हैं। कोई शिव की पूजा करता है तो उसे बिल्वपत्र और धतूरे के पेड़ पौधों की रक्षा करनी होगी। भारतीय देवी देवता भी पशु पक्षी और पेड़ पौधों से लेकर प्रकृति के विभिन्न अवयवों के संरक्षण का संदेश देते हैं। मत्स्य पुराण में एक वृक्ष की मनुष्य के 10 पुत्रों से तुलना की गई। यथा–

दशकूप समावापीः दंश वापी समोह्रदः।
दशह्रद समः पुत्रों दशपत्र समोद्रुमः।।

भावार्थ दशकों के बराबर एक बावड़ी 10 बावरियों के बराबर एक तालाब है 10 तालाब के बराबर 1 पुत्र है और 10 पुत्रों के बराबर एक वृक्ष है। जैसा अनुराग भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में वृक्षों के प्रति पाया जाता है, वैसा अनुराग शायद ही किसी अन्य संस्कृति में मिलता हो। यहाँ पेड़ पौधों को पुत्र से भी ऊंचा दर्जा दिया गया है। यहाँ पेड़ों की पूजा की जाती है, पेड़ों को बचाने के लिए स्वबलिदान की भी परंपरा वैश्विक आश्चर्य का विषय रही है।

अर्थववेद में बताया गया है कि आवास के पास शुद्ध जलाशय होना चाहिए। जल दीर्घायु प्रदान कल्याण कारक, सुख देने वाला और प्राणों की रक्षा करने वाला होता है, बिना शुद्ध जल के जीवन संभव ही नहीं है। पूर्वजों ने प्रवाह मान सरिता गंगा को ही नहीं वरन सभी जीवनदायिनी नदियों को मां की संज्ञा दी है और भिन्न–भिन्न अवसरों पर भी पर इन नदी नालों तालाबों सागरों की उपासना भी की जाती है।

❖ **जल ही जीवन है**

नदियों को जीवनदायिनी कहकर असीमित जल को देवता उपलक्ष्य के रूप में मानते हुए उसके समुचित उपयोग पर बल दिया गया है मनुस्मृति में कहा गया है। यथा–

नात्सु मूत्रम् पुरीषम् वाष्टोवनम् समुरसृजेत।
अमेध्यलिप्तभव्यद्वा लोहिवं वा विषाणि वा।।

भावार्थ जल में मल–मूत्र, थूक अथवा अन्य दूषित पदार्थ रक्त या विष का विसर्जन नहीं करने के लिए उपदेशित किया गया है। गंगा नदी को गंगा मां की संज्ञा दी गई है और ऐसा कहा गया है कि गंगा नदी के दर्शन मात्र से ही मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है यथा –

गंगे तव दर्शनात मुक्तिः।

अथर्ववेद के भूमि सुक्त् में जल की प्राप्ति की कामना संबंधित उल्लेख किया गया है–

'शुद्धा व आपस्तन्वे क्षरन्तु.........।'

भारतीय संस्कृति में जल को इतनी महत्वपूर्ण स्थिति प्रदान की गई है कि प्रातः काल स्नान करने से पहले जल स्रोत में छोटा सा पत्थर फैंककर उन्हें जगाया जाता है, चरण स्पर्श कर स्नान किया जाता है। भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं में जो भी लोकोक्तियां कहावतें मुहावरे विशिष्टतः लोकगीत प्रचलन में हैं, उन सभी में जल संरक्षण की चिंतन को महत्ता प्रदान की गई है।

❖ **तपोभूमि पर्वत**

देश के प्रमुख पर्वत भारतीय देवी–देवताओं के निवास स्थान है। धार्मिक परंपराओं से जोड़कर पर्वतों को पर्यावरण संरक्षण को महत्ता प्रदान की गई है यदि पर्वतों की पूजा यहां नहीं होती तो खनन माफिया उन्हें कब के उजाड़ चुके होते हैं। कैलाश महाशिव की तपोभूमि है। हिमालय को भारत का किरीट कहा गया है। श्रीकृष्ण गोवर्धन की पूजा का विधान इसलिए शुरू किया था, क्योंकि इस पर अनेक औषधीय जड़ी बूटियां होती थी।

❖ **वन्य जीव संरक्षण**

इसी तरह जीव जंतु के संरक्षण को भी महत्ता उन्हें दैवीय स्वरूप प्रदान कर की गई थी जैसा कि सर्वविदित है कि मानव और पशु परस्पर एक दूसरे पर निर्भर है। यहां गाय, कुत्ता, बिल्ली, शेर, चूहा, हाथी यहां तक की जहरीले नागराज को भी पूजनीय कहा गया है। यहां प्रत्येक हिंदू परिवार में पहली रोटी गाय के लिए और आखिरी रोटी कुत्ते के लिए निकाली जाती है। चींटियों को भी आटा डाला जाता है। घर की मुंडेर पर पक्षियों के लिए दाना पानी रखा जाता है एवं पानी के परिन्दे लगाये जाते है। यह सब परंपराएं जीव संरक्षण का संदेश देती है। नाग विष से मनुष्य के लिए प्राणरक्षक औषधियों का निर्माण होता है। नाग पूजा के पीछे का रहस्य भी यही है। वन्य जीव जंतुओं की रक्षण एवं संरक्षण की जो उदात्त भावना भारतीय दर्शन में है, किसी अन्य दर्शन में नहीं। गाय, बैल,बाघ, शेर, चीता, हाथी, चूहा, गरुड़,सर्प, कच्छप, हंस एवं उल्लू आदि अनेक छोटे–बड़े हिंसक, अहिंसक जीव–जंतुओं को देवी–देवताओं के वाहन के रूप में सम्मिलित कर उनके संरक्षण को अध्यात्म से जोड़ा है।

❖ **व्याधि मुक्ति दाता : यज्ञ विधान**

यज्ञ विधान के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण की परंपरा प्राचीन काल से ही जनमानस के मन में रची बसी हुई है। यज्ञ से तात्पर्य त्याग, बलिदान, शुभकर्म। अपने प्रिय खाद्य पदार्थ एवं मूल्यवान, सुगंधित एवं पौष्टिक द्रव्यों को अग्नि एवं वायु के माध्यम से समस्त संसार के कल्याण के लिए यज्ञ द्वारा वितरित करना। राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ (एनबीसी) द्वारा किए गए एक शोध से ज्ञात हुआ कि यज्ञ और हवन के दौरान उठने वाले धुंए से वायु में मौजूदा हानिकारक जीवाणु 94 प्रतिशत तक नष्ट हो जाते है तथा साथ ही इसके धुंए से पर्यावरण शुद्ध हो जाता है। इससे बीमारियां फैलने की आशंका काफी हद तक कम हो जाती है। वैज्ञानिक कृत्रिम वर्षा कराने में सफल नहीं हो पाये है, फिर भी ऐसा पाया गया है कि ं यज्ञ हवन प्रविधि से प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की स्पष्ट व्याख्या की गई है। प्रकृति की पूजा का एकमात्र माध्यम अग्निहोत्र से पर्यावरण व्याधिमुक्त एवं परिशोधित होता है।

❖ **प्राणदायिनी वायु**

उपनिषदों में वायु की देवी शक्ति की अवधारणा को वर्णित किया गया है जिसमें उल्लेख किया गया है कि वायु ही प्राण बनकर मिट्टी के पुतले इस देह को सजीव बना देती है। वेदों में वायु की शुद्धता पर बल देते हुए कहा गया है कि प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में शुद्ध एवं प्रदूषण रहित वायु अति आवश्यक है।

वात आ वातु भेषतं शंभु मयोभु नो हृदे

वेदों में भी वायु के औषधीय गुणों को महत्व दिया गया है और प्रार्थना की गई है की हवा तुम अपनी औषधि ले आओ और यहां से समस्त विकारों को दूर कर दो, क्योंकि वायु ही सब औषधियों से परिपूर्ण है।

❖ **ऊर्जा के अजस्र स्त्रोत सूर्य**

ऊर्जा के अजस्र स्रोत सूर्य को देवता मानते हुए **सूर्यः देवो भवः** कहा गया। यह सर्वविदित है कि बिना सूर्य के इस धरातल पर जीव जगत का अस्तित्व संभव नहीं हो सकता है। सूर्य से हमारा वियोग ना हो, ऐसा कथन ऋग्वेद में वर्णित है–

नः सूर्यस्य संदृशो मा युयोधाः (ऋग्वेद 2/33/1)

उपनिषदों में सूर्य को प्राण माना गया है यथा––

आदित्यो है वो प्राणः(प्रश्नोपनिषद–1/5)

सौर ऊर्जा प्राप्त करने के लिए भारतीय परंपरा में घरों का मुख्य द्वार पूर्व अथवा उत्तर दिशा में रखने संबंधित चरक संहिता में निर्देशित किया गया। हमारा देश प्रतिवर्ष 5000 ट्रिलियन किलोवाट सौर ऊर्जा प्राप्त करता है। स्वच्छ आकाश की स्थिति होने पर पृथ्वी के किसी भी क्षेत्र में प्रतिदिन प्राप्त होने वाली सौर ऊर्जा का औसत परिमाण 4–7 KWH/M^2 के मध्य होता है।

हमारे अधिकांश ऊर्जा का स्त्रोत अंततः सूर्य से प्राप्त ऊर्जा से व्युत्पन्न होती है। सौर ऊर्जा के प्राथमिक स्त्रोत के रूप न केवल खाद्य श्रृंखला की निरंतरता के लिए महत्वपूर्ण है अपितु यह मनुष्य के मन व शरीर को भी सक्रिय करता है। आयुष मंत्रालय ने 14 जनवरी 2022 को (मकर सक्रांति के अवसर पर) वैश्विक स्तर पर 75 लाख लोगों के लिए एक वैश्विक सूर्य नमस्कार कार्यक्रम आयोजित किया। इसी दिन सूर्य की प्रत्येक किरण के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए सूर्य प्रणाम के रूप में सूर्य नमस्कार की पेशकश की गई। सूर्य नमस्कार शारीरिक प्रतिरक्षा विकसित करने तथा मानवीय जीवन शक्ति में सुधार लाने के लिए जाना जाता है। सूर्यकिरणों से हमें विटामिन डी मिलता है, जो कि स्वास्थ्यवर्धक है।

'निष्कर्ष'

प्राकृतिक संसाधनों एवं तत्वों का संरक्षण, बचत प्रक्रिया, दीर्घकालीन उपाय, अत्यधिक दोहन पर रोक, वैकल्पिक समाधान, समुचित उपयोग तथा आम जनमानस में प्राकृतिक संसाधनों के बेहताशा उपयोग के प्रति जागरूकता आदि उपायों को अपनाकर किया जा सकता है। वर्तमान समय की मांग है कि भारतीय संस्कृति की प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से जुड़ी उपर्युक्त समस्त संकल्पनाओं का चिंतन करें और इन्हें अपने जीवन में अपनाएं। इस धरा के अस्तित्व को भावी संतति के लिए बचा सकें और अंत में–

जब प्रकृति का करेंगे अधिक शोषण, तो नहीं मिलेगा किसी को भी पोषण।

इतनी महान संस्कृति के उन्नायक ऋषि–मुनियों की इस धरा पर लोकशाही एवं नौकरशाही के द्वारा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता का अभाव दृष्टिगोचर होता है। हम कंक्रीट के जंगल का विस्तार करने के साथ–साथ अपनी सांस्कृतिक विरासत को विस्मृत करते जा रहे हैं, यदि हम हमारी सांस्कृतिक विरासत का अनुशीलन करते हुए सादा जीवन उच्च विचार के आदर्श को अपनाएं, तो हम वैश्विक जगत को पारिस्थितिकीय संतुलन का एक मॉडल दे सकेंगे और यह भारत का समूची दुनिया को एक बहुत बड़ा अमूल्य उपहार होगा। जातीय–वानिकी प्रथाओं को परंपराओं, प्रथाओं एवं अनुष्ठानों के साथ एकीकरण कर प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण किया जा सकता है।

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं प्रबंधन एक कठिन कार्य है। हमें इस विषय पर चिंतन करने के लिए खुले दिमाग से सभी पक्षों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखना होगा। कुछ व्यक्तियों के निहित स्वार्थ बहुसंख्यकों के दुख का कारण बन सकते हैं तथा प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण विनाश भी संभव है। कानून, नियम एवं विनियमन से आगे हमें अपनी व्यक्तिगत और सामूहिक आवश्यकताओं को सीमित करना होगा, जिससे कि विकास के नवीन प्रतिमानों का लाभ वर्तमान तथा भावी पीढ़ियों को उपलब्ध हो सके।

शोध संदर्भ

1. प्रहलाद सिंह, भारतीय संस्कृति में शुरू से ही पर्यावरण का विशेष महत्त्व, प्रभा साक्षी डॉट कॉम, 5 जून 2021
2. मलिनी अवस्थी, भारतीय संस्कृति के मूल में है पर्यावरण संरक्षण की भावना, जागरण डॉट कॉम।
3. भारती बस्ती, भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण, भारती बस्ती डॉट कॉम।
4.गणेश कुमार पाठक ''भारतीय चिंतन परंपरा में जल एवं पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा''
5. लोकेंद्र सिंह ''प्रकृति सहेजने का शुभ संदेश देती है हमारी परंपराएं''
6. ऋग्वेद
7. छान्दोग्य उपनिषद्
8. अर्थववेद
9. यजुर्वेद
10. मनुस्मृति
11. स्कंद पुराण
12. चाणक्य नीति
13. pib.gov.in/press